

13, 1994. तमेवार्थं ध्यायमाना मनोभिः 1, 7147. ध्यायम् absol. KATHĀS. 22, 147. Verz. d. Oxf. H. 161, b, 2 v. u. Häufig ohne obj. *denken, bei sich denken, nachdenken*: प्रच्छन्नः को ऽपि देवो ऽयमिति द्यौः VID. 43. अतर्द्यौः RĪGĀ-TAR. 3, 192. ध्यात्वा चिरम् MBH. 3, 2499. 3, 7011. 7557. R. 1, 1, 71. 6, 103, 1. MEGH. 3. ÇĀK. 82, 16. ध्यायते MBH. 13, 750. ध्यायमान 2, 1677. R. 1, 9, 43. pass.: त्रिभुवनपतिरेको ध्यायते योगिभिः DBŪRTAS. 71, 4. ध्यात AIT. UP. 3, 11. MBH. 3, 3878. HARIV. 8356. BHARTṚ. 3, 46. ŚIH. D. 34, 7. ध्यातमात्रोपगामिन् *erscheindend, sobald man nur daran gedacht hat*, VID. 42. ध्यातोपस्थित 234. ध्यातोपनत 210. ध्यातमात्रागत KATHĀS. 3, 45. — Vgl. die ältere Form धी.

— अति *in tiefem Nachdenken sich befinden*: ततो ऽतिध्यायतस्तस्य शक्तिरे मानसीः प्रजाः VP. bei Muir, Sanskrit Texts 1, 25, N. 40.

— अनु *nachsinnen, seine Gedanken richten auf, denken an, gedenken*: नानुध्यायाद्ब्रह्म क्न्दान् ÇAT. BR. 14, 7, 23. मामनुध्याय भावेन MBH. 1, 3464. 4530. 2, 2607. 13, 2143. 5917. HARIV. 1203. R. 2, 98, 22 (GORR. 107, 12). 5, 23, 30. RAGH. 14, 60. 17, 36. RĪGĀ-TAR. 2, 50. BHĀG. P. 1, 15, 2. PRAB. 68, 4, v. l. न हि कार्यमनुध्याति नारी MBH. 1, 8459. अनुध्यातः 3, 15371. HARIV. 1013. 1211. 1212. mit dem gen.: परेषामनुध्यायन् MBH. 12, 9666. ohne obj.: मा तत्कृते क्नुध्याहि 2, 1644. मुहूर्तमनुध्यात्वा (sic) R. 1, 2, 20. अनुध्यात *an den oder woran man denkt*: सो ऽनुध्यातस्तु शक्रेण MBH. 7, 2180. BHĀG. P. 8, 24, 44. RĪGĀ-TAR. 1, 144. in Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 539, 2 (vgl. HALL in 7, 36). 543, 17. स त्वं करेनुध्यातः BHĀG. P. 4, 11, 12. in Gedanken vertieft MBH. 12, 4678. *an Jmd denken so v. a. bedauern, vermissen*: (पशवः) एतमालभ्यमानमनुध्यायति KĀTH. 30, 9. *Jmd Etwas nachtragen*: अप वा अस्यैष धिल्लियो होयते सो ऽनुध्यायति TS. 3, 1, 3, 6. — Vgl. अनुध्या, °ध्यान (das Gedenken *Jmdes*: मदनुध्यानवृत्तिता MBH. 2, 2589. KUMĀRAS. 6, 21), °ध्यायिन्, अनुध्यायिन् TBR. 2, 1, 4, 3.

— समनु *nachsinnen, gedenken*: एतान् — समनुध्यातवान्करः MBH. 13, 968. का बुद्धिं समनुध्याय 12, 6644. मुहूर्तं समनुध्याय 11, 242. मनसा HARIV. 6513.

— अप *gering von Jmd (acc.) denken und hiermit es Jmd anthun*: अधर्मस्ते न भविता नापध्यास्याम्यहम् MBH. 7, 2112. 2076. 12, 9191. 7801. 13, 689. R. GORR. 2, 109, 55. तदा भीमं कृदा राज्ञश्चपध्याति सः MBH. 13, 61. अपध्याता च विप्रेण न्यपतद्धरणोतले 3, 13636. VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 47, b, 19. — Vgl. अपध्यान MBH. 1, 8437. 2, 2597. 13, 5458. HARIV. 9058. MĀRK. P. 8, 30, 181.

— समप *dass.*: तामवेत्य स क्रुद्धः समपध्यायत MBH. 3, 13655.

— अभि *den Sinn auf Etwas richten, beabsichtigen, begehren*: तं देवाश्च ऋषयश्चाभ्यध्यायन् कथमस्मात्सोमो राजागच्छेदिति AIT. BR. 1, 27. प्रजापतिर्वै स्वां दुहितरमभ्यध्यायत् hatte ein Auge auf seine Tochter geworfen 3, 33. 4, 20. TBR. 1, 1, 3, 8. अग्निर्यं ता अपो ऽभिर्द्यौः मियुन्याभिः स्यामिति ÇAT. BR. 2, 1, 1, 5. ब्रह्म ज्ञानायाभिर्द्यौः er beabsichtigte dem Br. Gewalt anzuthun 4, 1, 3, 4. या वै श्रीरभ्यध्यासिषमिमास्ताः 6, 2, 1, 7. 12, 6, 1, 3. TS. 1, 7, 4, 6. आदित्यम् TAIT. ĀR. 2, 2, 4. वर्णरतिप्रमोदान् KATHOP. 1, 28. परद्रव्याणि JĀG. 3, 134. फलम् MBH. 3, 11238. सर्गम् BHĀG. P. 3, 12, 21. यदभिध्याम्यहं शश्वच्छुभं वा यदि वाशुभम् MBH. 3, 2402. schlechtweg *denken an, seine Gedanken richten auf*: श्रीकारमभिध्या-

यित (यः) PRAÇNOP. 3, 1. अभिध्यायेन्मनसा गुरुणा गुरुम् BHĀG. P. 4, 8, 44. 5, 7, 6. MĀRK. P. 17, 3. 23, 69. मामिव ते ऽभिध्यायते BHAVISHJA-P. in Verz. d. Oxf. H. 33, a, 19. ohne obj. *sich in Gedanken vertiefen* M. 1, 8. BHĀG. P. 3, 13, 18. MĀRK. P. 47, 25. Eine ganz ungewöhnliche Form haben wir in der folgenden Stelle: सर्वानो द्विपतस्तात ब्राह्मणा ज्ञातमन्यवः । गीर्भिर्दार्णयुक्ताभिर्भिध्यासुरपूजिताः ॥ MBH. 13, 2144. — Vgl. अभिध्या fgg.

— समभि *nachsinnen* MBH. 3, 2217. दौहृदम् *sein Verlangen richten auf*: श्रुतो ऽनुक्तेषु या नारी समभिध्याति दौहृदम् SUPR. 1, 323, 15.

— अत्र *gering von Jmd (acc.) denken, seine Geringachtung gegen Jmd an den Tag legen*: सुतो सतीमवदध्यावनागाम् BHĀG. P. 4, 3, 9. अवध्यात R. 1, 25, 12. BHĀG. P. 3, 12, 6. नावध्येयः प्रजापालः प्रजाभिर्धवानपि 4, 13, 23.

— आ *Jmd Etwas in Gedanken zukommen lassen, anwünschen*: श्रेयो ममाध्याहि MBH. 13, 4900. in Gedanken vertieft sein BHĀG. P. 9, 14, 43. — Vgl. आध्यान.

— समा *sich mit seinen Gedanken ganz vertiefen in*: बुद्धन्वकिं समाध्यायन्पठन्मन्त्रम् HARIV. 14823. इदं पठन्समाध्यायन् R. GORR. 1, 1, 104.

— उप *Jmdes gedenken*: सोपध्यातो भगवता ब्रह्मणा MBH. 1, 3847. gleich अप und viell. nur fehlerhaft: उपध्यातो (d. i. उपध्यातो) महेन्द्रो हि मुनिना देवशर्मणा । अस्याकाङ्क्षपुरा भार्याम् HARIV. 7433.

— नि *merken*: उप वै शुश्रूषते नि वै ध्यायति AIT. BR. 3, 2. *sich in Gedanken vertiefen*: निर्द्युः BHĀG. P. 3, 15, 44. *Jmdes gedenken*: तं निर्द्यौः BHARTṚ. 14, 65. Vgl. निध्यान. — *desid. aufmerksam sein*: व्याचक्षाणस्य मे निर्दिध्यासस्व ÇAT. BR. 14, 5, 4, 1. 7, 3, 5. निर्दिध्यासितव्य *wor auf man seine Aufmerksamkeit zu richten hat* 3, 1, 5. Vgl. निर्दिध्यासन, निर्दिध्यासु.

— अभिनि *seine Aufmerksamkeit auf Etwas richten*: तं शब्दमभिनिध्याय R. 1, 28, 7.

— प्रणि *dass.*: प्रणिर्द्यौः मनः स्वयम् BHĀG. P. 1, 7, 3.

— निस् *mit seinen Gedanken Jmd oder Etwas nachgehen, nachsinnen, überlegen*: निर्ध्यायतो ऽनिशम् । मुधामृत्तिकलामौलिम् RĪGĀ-TAR. 1, 279. अभिचारस्य बन्ध्यत्वम् 6, 123. 4, 316. इति निर्ध्याय 3, 16. निर्ध्याय मुहूर्तम् R. 6, 31, 2.

— परि *hinundhersinnen*: परिर्द्यौः R. GORR. 2, 37, 13.

— प्र *nachsinnen, überlegen* MBH. 1, 7013. 3, 2773. 6, 2897. 4524. 12, 7547. 13, 2372. R. 5, 8, 24. 13, 21. KIR. 3, 51. med. MBH. 3, 5030. 6, 5685. *Jmdes (acc. oder acc. mit प्रति) gedenken, seine Gedanken richten auf, denken an*: प्राध्यायद्गुहं हरिः HARIV. 10381. प्रद्यौः — राजानं प्रति MBH. 1, 1783. यत्पशवः प्रध्यायत GOBU. 3, 10. 14. *ansinnen, auf Etwas kommen*: मयैतन्नाम प्रध्यातं मनसा शोचता MBH. 3, 3882.

— संप्र *nachsinnen, überlegen* MBH. 3, 1411.

— प्रति *auf einen Gedanken kommen*: प्रतिध्यातं मया MBH. 3, 3880.

— सम् *nachsinnen, überlegen*: मुहूर्तं संद्यौ किमयं चोद्यतामिति MBH. 2, 8.

2. ध्या (= 1. ध्या) *f. das Denken*: (रथं ये चक्रुः) मनसस्परि ध्ययो RV. 4, 36, 2.

ध्यात् (von 1. ध्या) *nom. ag. der über Etwas nachsinnt, Denker*